Toppersnotes®
Unleash the topper in you

CUET - UG

Common University Entrance Test

National Testing Agency

Section I (A)

हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

CUET (UG)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	हिन्दी	
1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	4
3.	संज्ञा	7
4.	सर्वनाम	12
5.	संधि	14
6.	समास	31
7.	उपसर्ग	48
8.	प्रत्यय	60
9.	विशेषण	71
10.	क्रिया	72
11.	तत्सम तदभव	85
12.	वर्तनी शुद्धि	87
13.	शुद्ध–वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि	91
14.	विलोम – शब्द	102
15.	एकार्थी शब्द	110
16.	पर्यायवाची	117
17.	अनेक शब्दो के लिए एक शब्द	120
18.	मुहावरे	126
19.	लोकोक्ति	136
20.	रचना एवं रचनाकार	149
21.	गद्यांश	157
22.	पारिभाषिक शब्दावली	164

वर्ण विचार

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

<u>स्वर वर्ण</u> :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

<u>स्वरो का वर्गीकरण</u> :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार
(i) <u>ह्रस्व स्वर</u> – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है –
अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या –4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) <u>दीर्घ स्वर</u> – जिनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) <u>प्लुत स्वर</u> – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है – स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे :- अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार)
(i) <u>अनुनासिक स्वर</u> – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोट:- अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे :- अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं
(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।
बिना चन्द्र बिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे :- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।

(3) जिह्वा के आधार पर :- (3 प्रकार)
(i) <u>अग्र स्वर</u> :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ
(ii) <u>मध्य स्वर</u> – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) <u>पश्च स्वर</u> – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

मध्य – अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार
(i) <u>वृत्ताकार</u> – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना ।
जैसे :- उ, ऊ ओ, औ

(ii) <u>अवृत्ताकार</u> – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना ।
जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार
(i) <u>संवृत स्वर</u> – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना ।
जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) <u>अर्द्ध संवृत स्वर</u> – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) <u>विवृत</u> – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना । जैसे – आ

(iv) <u>अर्द्धविवृत</u> :- उच्चारण करने पर विवृत से थोडा कम खुलना ।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं ।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) स्पर्श व्यंजनों की कुल संख्या 27(मूलत 25 + 2 उत्क्षीप्त व्यंजन)
(ii) अन्तः स्थ व्यंजन – (04) :- य, र, ल, व
(iii) उष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(क) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ड़् ढ् ढ़् ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4
जैसे :- य् व् र् ल्

(iii) उष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह उष्म व्यंजन कहलाता है ।

कुल उष्म व्यंजन – 4
जैसे – श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन :- इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – क् + ष
त्र – त् + र
ज्ञ – ज् + ञ
श्र – श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

i. कण्ठ स्थान – 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान – तालव्य वर्ग
सूत्र – इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान – मूर्धन्य वर्ग
सूत्र – ऋटुरषाणां मूर्धा
ऋ,ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ड,ढ,ढ,ण) र, ष

iv. दन्त स्थान – दन्त्य वर्ग
सूत्र – लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान – ओष्ठ्य वर्ग
सूत्र – उपूपध्मानीया ना मो ष्ठौ
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ऱप, ऱफ)

vi. नासिका स्थान – नासिक्य वर्ण
सूत्र – नासिका अनुस्वारस्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है ।
1) अघोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
2) घोष वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ड, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार

(ii). <u>श्वास वायु के आधार पर</u> –

मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं ।

1) <u>अल्पप्राण</u> – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ड़ + य, र, ल, व + सभी स्वर
2) <u>महाप्राण</u> – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह

(iii). <u>उच्चारण के आधार पर</u> –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं ।

1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ङ, ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड., ढ
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

वर्ण विश्लेषण

परिभाषा – शब्द में प्रयोग की गयी ध्वनियों को अलग–अलग लिखने के कार्य को वर्ण विश्लेषण कहते है।

- हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
  (i) स्वर
  (ii) व्यंजन
- वर्ण विश्लेषण करने के लिए स्वरों की मात्राओं का ज्ञान होना बहुत जरूरी हैं।

वर्ण विश्लेषण के उदाहरण

"**अ**" स्वर के उदाहरण
कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ
रमन – र् + अ + म् + अ + न् + अ
हम – ह् + अ + म् + अ
कल – क् + अ + ल् + अ

"**आ**" स्वर के उदाहरण
रामा – र् + आ + म् + आ
माला – म् + आ + ल् + आ
हराना – ह् + अ + र् + आ + न् + आ

"**इ**" स्वर के उदाहरण
पिहर – प् + इ + ह् + अ + र् + अ
किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ

"**ई**" स्वर के उदाहरण
जीवन – ज् + ई + व् + अ + न् + अ
कहानी – क् + अ + ह् + आ + न् + ई
हरी – ह् + अ + र् + ई
साही – स् + आ + ह् + ई

"**उ**" स्वर के उदाहरण
उपर – उ + प् + अ + र् + अ
अतुल – अ + त् + उ + ल् + अ
अनुसार – अ + न् + उ + स् + आ + र् + अ
कबुतर – क् + अ + ब् + उ + त् + अ + र् + अ

"**ऊ**" स्वर के उदाहरण
दूसरा – द् + ऊ + स् + अ + र् + आ
भूरा – भ् + ऊ + र् + आ
हूनर – ह् + ऊ + न् + अ + र् + अ

"**ऋ**" स्वर के उदाहरण
ऋषि – ऋ + ष् + इ
पितृ – प् + इ + त् + ऋ
मातृ – म् + आ + त् + ऋ

"ए" स्वर के उदाहरण
रेल – र् + ए + ल् + अ
बेकरार – ब् + ए + क् + अ + र् + आ + र् + अ
खेल – ख् + ए + ल् + अ

"ऐ" स्वर के उदाहरण
तैयार – त् + ऐ + य् + आ + र् +अ
मैदान – म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
शैतान – श् + ऐ + त् + आ + न् + अ

"ओ" स्वर के उदाहरण
मोहर – म् + ओ + ह् + अ + र् + अ
कोबरा – क् + ओ + ब् + अ +र् + आ
कोयल – क् + ओ + य् + अ +ल् + अ
सोना – स् + ओ + न् + आ

"औ" स्वर के उदाहरण
औरत – औ + र् + अ + त् + अ
औषधि – औ + ष् + अ + ध् + इ
कौशल – क् + औ + श्+ अ +ल् + अ

संयुक्त व्यंजन के उदाहरण
उद्योग – उ + द् + य्+ ओ +ग् + अ
विद्या – व् + इ + द्+ य् +आ
न्याय – न् + य् + आ+ य् +अ
उज्जवल – उ + ज् + ज्+ व् +अ + ल् + अ

"अनुस्वार" के उदाहरण
संतोष – स् + अं + त्+ ओ +ष् + अ
नंदन – न् + अं + द्+ अ +न् + अ
वंदन – व् + अं + द्+ अ +न् + अ

"चन्द्रबिन्दु" के उदाहरण
काँस्य – क् + आँ + स्+ य् +अ
नाँद – न् + आँ + द् + अ
चाँद – च् + आँ + द् + अ
आँचल – आँ + च् + अ + ल् +अ

संयुक्त अक्षरों का विश्लेषण
क्षमा – क् + ष् + अ+ म् +आ
शिक्षा – श् + इ + क् + ष् +आ
कक्षा – क् + अ + क् + ष् +आ
त्रिशुल – त् + र् + इ + श् +उ + ल् + अ
त्रिकाल – त् + र् + इ+ क् +आ + ल् + अ
मित्र – म् + इ + त् + र् +अ
ज्ञानी – ज् + ञ् + आ + न् +ई

यज्ञ – य् + ज् + ञ् + अ
श्रोता – श् + र् + ओ + त् + आ
श्रेष्ठ – श् + र् + ए + ष् + ठ् + अ

"**र्**" के विभिन्न रूपों के उदाहरण
करम – क् + अ + र् +अ + म् + अ
कर्म – क् + अ + र्+ म् +अ
क्रम – क् + र् + अ + म् +अ
कृषि – क् + ऋ + ष् + इ

वर्ण विश्लेषण के अन्य उदाहरण

वरूण – व् + अ + र्+ उ +ण् + अ
प्राथमिक – प् + र् + आ + थ् +अ+ म् + इ + क् + अ
फेन – फ् + ए + न् + अ
भगवान – भ् + अ + ग्+ अ +व्+ आ + न् + अ
श्रमदान – श् + र् + अ+ म् +अ+ द् + आ + न् + अ
संतान – स् + अं + त् + आ +न् + अ
साक्ष्य – स् + आ + क्+ ष् +य्+ अ
यश – य् + अ + श्+ अ
पत्र – प् + अ + त् + र् +अ
तितली – त् + इ + त्+ अ +ल् + ई
दामोदर – द् + आ + म्+ ओ +द्+ अ + र् + अ
आरक्षण – आ + र् + अ+ क् +ष् + अ + ण् + अ
विज्ञान – व् + इ + ज्+ ञ् +अ+ न् + अ
आँख – आँ + ख् + अ
अवगुण – अ + व् + अ+ ग् + उ + ण् + अ
इन्तजार – इ + न् + त् + अ +ज् + आ + र् + अ
त्योहार – त् + य् + ओ + ह् + आ + र् + अ
गोरव – ग् + ओ + र्+ अ +व् + अ
तोंद – त् + ओं + द्+ अ
दण्डक – द् + अ + ण्+ ड् +अ+ क् + अ
नाटकीय – न् + आ + ट्+ अ +क् + ई + य् + अ
उधार – उ + ध् + आ+ र् +अ
एकाग्र – ए + क् + आ + ग् +र् + अ
ऋग्वेद – ऋ + ग् + व्+ ए +द् + अ
ओंकार – ओं + क् + आ+ र् +अ
कछुवा – क् + अ + छ्+ उ +व् + आ
नियोजक – न् + इ + य्+ ओ +ज् + अ + क् + अ
परिपूर्ण – प् + अ + र्+ इ +प् + ऊ + र् + ण् + अ
परिभाषा – प् + अ + र्+ इ +भ् + आ + ष् + आ
कागज – क् + आ + ग्+ अ +ज् + अ
विश्राम – व् + इ + श् + र् +आ + म् + अ
आँचल – आँ + च् + अ+ ल् +अ
सफलता – स् + अ + फ्+ अ +ल् + अ + त् + आ

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
  जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
  अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है – नाम
दूसरे शब्दों मे किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से उसे पहचाना जाता है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

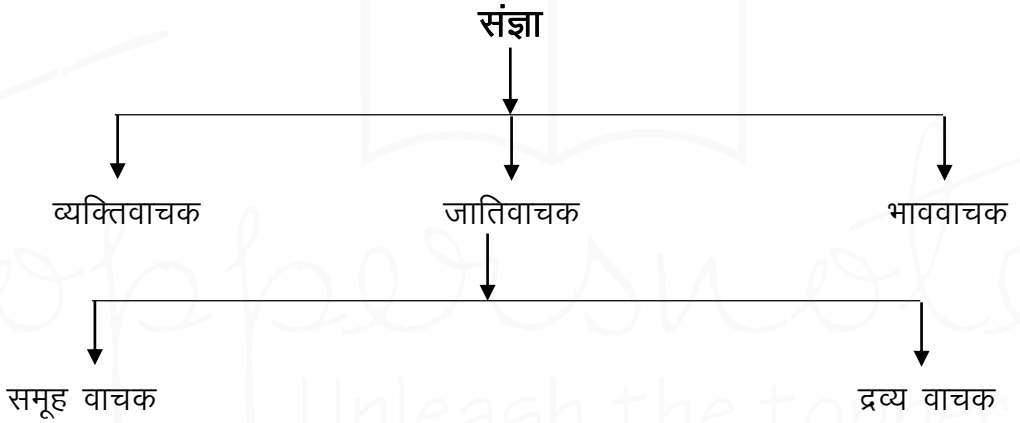

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

   जैसे – भारत, दिल्ली, चम्बल, हिमालय, दीपावली, रामायण, पश्चिम, दैनिक भास्कर, सोमवार, मार्च।

   व्यक्तिवाचक संज्ञा की पहचान का तरीका–
   व्यक्तिवाचक संज्ञा संसार में एक ही होती है। इसको हम पहले से जानने के आधार पर पहचानते है।
   जैसे – लालकिला, कुतुबमीनार, अकबर, लाल बहादुर शास्त्री, गंगा नदी, रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, जाना है, समझा है तभी हम जान सकते है कि यह भवन तो लाल किला है, यह कुतुबमीनार की तस्वीर है, ये छवि तो लाल बहादुर शास्त्री जी की है, ये नदी तो गंगा है, यह पुस्तक रामायण है अर्थात् जिनका नाम लेते ही एकमात्र छवि अपने मानसिक पटल पर आ जाए वहीं व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

2. **जातिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं। जैसे – पुस्तक, दिन, शहर, वेद, घर, लड़का, पर्वत, झरना, आदि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

जातिवाचक संज्ञा की पहचान

जातिवाचक संज्ञा एक वर्ग है और इसकी अनेक इकाइयाँ है, जैसे – फूल, पत्थर, पहाड़, शहर, लड़के। इनके अनेक वर्ग विद्यमान है। जातिवाचक संज्ञा की हम समान गुण के कारण पहचान करते है। पहले से उन वर्ग या गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य व्यक्ति में पहचानकर नई वस्तु या प्राणी को हम तुरन्त पहचान लेते है। जैसे – किसी पत्थर को देखकर संगमरमर कहना, आम को देखकर लंगड़ा आम कहना, अनाज की बहुत सारी ढेरियो में गेहूँ की कल्याण सोना किस्म का नाम लेना आदि।

दूसरे शब्दों में – 'शहर' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह शब्द बहुत सारे शहरों का बोध कराता है किन्तु सरदार शहर एक विशेष शहर का नाम है, इसलिए सरदार शहर व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

समूहवाचक संज्ञाओं की पहचान व सूची

• तारों का पूँज	• अनाज का ढेर
• फूलों, अंगूरों, चाबियों का गुच्छा	• यात्रियों, टिड्डियों का दल
• पर्वतों की श्रृखला	• ऊँटों या यात्रियों का काफिला/कारवाँ
• फूलों (गुलों) का दस्ता – गुलदस्ता	• चोर, लुटेरों, अपराधियों का गिरोह
• केले का घोंद	• कवियों, लेखकों, गायकों की मण्डली
• लताओं का कुंज	• कार्यो की सूची
• भेड़ों, बकरियों का झुण्ड	• राजनीतिज्ञों का गुट
• मजदूरों, कर्मचारियों, राज्यों का संघ	• अच्छे कार्यो हेतु अच्छे व्यक्तियों का शिष्ट मण्डल

3. **भाववाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे – मधुर, कोमलता, सुंदरता, जवान, लोभ, सलाह, प्यार, क्रोध, बुढ़ापा, दास्ता, मित्रता।
- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरतर
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

अपवाद

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल, पुस्तकालय, वर्ग, टीम, समिति, आयोग, पुलिस, अधिकारी, तास, कर्मचारी, आर्केस्ट्रा, काफिला।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

ये भी जानें – जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में –
नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
आजाद – भारत की स्वतंत्रता में आजाद ने महत्त योगदान दिया था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
गाँधीजी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

विशेषण	**जातिवाचक संज्ञा**
गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

ये भी जाने –

- शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा।
- यहाँ शुक्ल किसी जाति का नाम ना होकर व्यक्ति (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) का बोधक है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में –

कभी–कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में होता है।
जैसे – देश को हानि जयचंदों से होती है। (यहाँ जयचंद किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का सूचक है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य में प्रयुक्त होकर अपने समान गुण/विशेषता के भाव को प्रकट करे तो वहाँ जातिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

- **शेक्सपीयर** – कालिदास को भारत का शेक्सपीयर कहा जाता है। (जातिवाचक संज्ञा)

- **बाइबिल** – रामचरितमानस हिन्दुओं की बाइबिल है।
  यहाँ बाइबिल किसी धर्म विशेष का ग्रंथ न होकर धर्म ग्रन्थों की जाति का बोधक है।

द्रव्यवाचक, समूहवाचक, भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में –

ध्यान दें – द्रव्यवाचक, समूहवाचक, भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग कभी–भी बहुवचन में नहीं होता है, क्योंकि बहुवचन में प्रयोग होने पर वे जातिवाचक संज्ञा बन जाती है।

जैसे –

- वहाँ घी बिकता है। (घी का एकवचन में प्रयोग अतः घी द्रव्यवाचक संज्ञा है।)
  वहाँ कई प्रकार के घी बिकते है। (घी का बहुवचन में प्रयोग अतः जातिवाचक संज्ञा होगी।)
- टीम मैच खेलने के लिए तैयार है। (समूह वाचक संज्ञा)
  टीमें आपसी मुकाबले के लिए तैयार है। (जातिवाचक संज्ञा)
- उसकी चोरी पकड़ी गई। (भाववाचक संज्ञा)
  उस क्षेत्र में कई चोरियाँ हुई। (जातिवाचक संज्ञा)

यदि कोई क्रियावाचक शब्द वाक्य के आरम्भ में कर्ता कारक के रूप में लिखा हो तो वहाँ उसे क्रिया ना मानकर क्रियार्थक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

- पढ़ना एक अच्छी आदत है।
- घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
- दौड़ना खिलाड़ियों की दिनचर्या में शामिल है।

नोट – यदि कोई क्रियावाचक शब्द ओकारांत बहुवचन के रूप में लिखा हो तो उनको भी क्रिया शब्द नहीं मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे – हँसतों का मत रूलाओ।
सोतों को मत जगाओ।

- ममता/एकता/समता जैसे शब्दों में मूलतः भाववाचक संज्ञा मानी जाती है, परन्तु वाक्य में प्रयुक्त होकर ये शब्द किसी स्त्री के नाम को प्रकट करें तो इनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा होगी।
  जैसे – माँ की ममता अद्वितीय है। (भाववाचक संज्ञा)
  एकता अपने माता–पिता की इकलौती संतान है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
  विश्वजन में एकता कायम रहे। (भाववाचक संज्ञा)
  ममता कक्षा मे होनहार छात्रा है। (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरूक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
- अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम –** वह सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

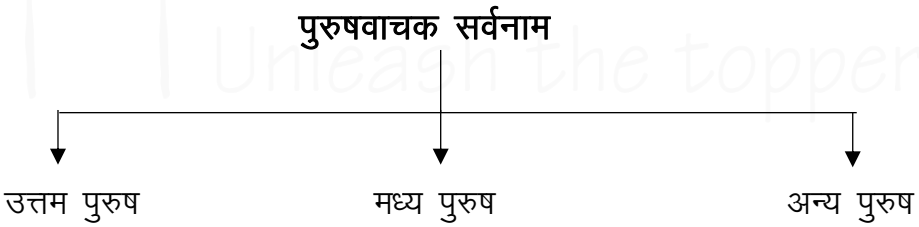

(i) **उत्तम पुरुष –** बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) **मध्यम पुरुष –** श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू , तुम, आप, आप सब।

(iii) **अन्य पुरुष –** बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम –** वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह
दूर की वस्तु के लिए – वह

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम –** वह सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – कोई
   - सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
     निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
   - रमन को कोई बुला रहा है।
   - दूध मे कुछ गिरा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम –** दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता हैं।
   जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
   जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
   कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था।

6. **निजवाचक सर्वनाम –** ऐसे सर्वनाम जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – आप, स्वयं, खुद।
   जैसे – मैं अपने <u>आप</u> चला जाऊँगा।

   (i) सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
   (ii) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम
   (iii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
   (iv) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

संधि

संधि का अर्थ–मिलान
संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते है–
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**

   स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

   जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

(i) दीर्घ संधि
(ii) गुण संधि
(iii) वृद्धि संधि
(iv) यण संधि
(v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

1. परमार्थ – परम + अर्थ
   अ + आ = आ
2. कार्य + आलय = कार्यालय
   (आ + अ = आ)
3. परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी
   (आ + आ = आ)
4. महाशय = महा + आशय
   (इ + इ = ई)
   रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
   (ई + इ = ई)
   शची + इन्द्र = शचीन्द्र
   (इ + ई = ई)
   अभि + ईप्सा = अभीप्सा

इ + ई = ई

(ई	+	ई	= ई)	(उ	+	उ	= ऊ)
नदी	+	ईश	= नदीश	भानु	+	उदय	= भानूदय
(उ	+	ऊ	= ऊ)	(ऊ	+	उ	= ऊ)
लघु	+	ऊर्मि	= लघूर्मि	वधू	+	उल्लास	= वधूल्लास
(ऊ	+	ऊ	= ऊ)	ऋ	+	ऋ	= ॠ
वधू	+	ऊर्मि	= वधूर्मि	पितृ	+	ऋण	= पितॄण

दीर्घ संधि के उदाहरण

1. अन्नाभाव – अन्न + अभाव
2. भोजनालय – भोजन + आलय
3. विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
4. महात्मा – महा + आत्मा
5. गिरीन्द्र – गिरि + इन्द्र
6. महीन्द्र – मही + इन्द्र
7. गिरीश – गिरि + ईश

8. रजनीश	–	रजनी + ईश
9. भानूदय	–	भानु + उदय
10. वधूत्सव	–	वधू + उत्सव
11. रामावतार	–	राम + अवतार
12. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
13. रामायण	–	राम + अयन
14. धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म
15. पराधीन	–	पर + अधीन
16. पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष
17. दैत्यारि	–	दैत्य + अरि
18. शताब्दी	–	शत + अब्दी
19. धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ
20. मुरारि	–	मुर + अरि
21. नीलाम्बर	–	नील + अम्बर
22. परमार्थ	–	परम + अर्थ
23. रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष
24. स्वाधीन	–	स्व + अधीन
25. गीताजंली	–	गीत + अंजली
26. दीपावली	–	दीप + अवली
27. प्रार्थी	–	प्र + अर्थी
28. छिद्रन्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी
29. मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन
30. अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी
31. सापेक्ष	–	स + अपेक्ष
32. अभयारण्य	–	अभय + अरण्य
33. सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी
34. नारायण	–	नार + अयन
35. परमात्मा	–	परम + आत्मा
36. पदावलि	–	पद + अवलि
37. रत्नाकर	–	रत्न + आकर
38. निगमागमन	–	निगम + आगमन
39. पद्माकर	–	पद्म + आकर
40. शरणागत	–	शरण + आगत
41. सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह
42. विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन
43. परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी
44. रेखांकित	–	रेखा + अंकित
45. मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली
46. दावानल	–	दावा + अनल
47. तथापि	–	तथा + अपि
48. महाशय	–	महा + आशय
49. द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव
50. विद्यालय	–	विद्या + आलय
51. महात्मा	–	महा + आत्मा
52. प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद
53. कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र

54. अतिव – अति + इव
55. अभीष्ट – अभि + इष्ट
56. अतीत – अति + इत
57. महीन्द्र – मही + इन्द्र
58. महतीच्छा – महती + इच्छा
59. कपीश – कपि + ईश
60. प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा
61. अधीक्षण – अधि + इक्षण
62. अभीप्सा – अभि + इप्सा
63. नारीश्वर – नारी + ईश्वर
64. सतीश – सती + ईश
65. लघूत्तम – लघु + उत्तम
66. सूक्ति – सु + उक्ति
67. अनूदित – अनु + उदित
68. गुरूपदेश – गुरु + उपदेश
69. भानूदय – भानु + उदय
70. सिंधूर्मि – सिंधु + ऊर्मि
71. भानूर्जा – भानु + ऊर्जा
72. वधूत्सव – वधू + उत्सव
73. चमूत्तम – चमू + उत्तम
74. मातृण – मातृ + ऋण
75. होतृकार – होतृ + ऋकार

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि

उदाहरण

1. गणेश – गण + ईश
2. यथेष्ट – यथा + इष्ट
3. रमेश – रमा + ईश
4. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
5. गंगोर्मी – गंगा + ऊर्मि
6. कष्वर्षि – कष्व + ऋषि
7. शुभेच्छा – शुभ + इच्छा
8. नरेश – नर + ईश
9. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
10. सप्तर्षि – सप्त + ऋषि
11. नरेन्द्र – नर + इन्द्र
12. भारतेन्दु – भारत + इन्दु
13. मृगेन्द्र – मृग + इन्द्र
14. स्वेच्छा – स्व + इच्छा

15. देवेन्द्र – देव + इन्द्र
16. प्रेषिती – प्र + ईषिती
17. इतरेतर – इतर + इतर
18. अंत्येष्टि – अन्त्य + इष्टि
19. नृपेन्द्र – नृप + इन्द्र
20. महेन्द्र – महा + इन्द्र
21. अपेक्षा – अप + ईक्षा
22. प्रेक्षक – प्र + ईक्षक
23. राकेश – राका + ईश
24. गुड़ाकेश – गुड़ाका + ईश
25. सूर्योदय – सूर्य + उदय
26. सोदाहरण – स + उदाहरण
27. आद्योपान्त – आद्य + उपान्त
28. प्राप्तोदक – प्राप्त + उदक
29. जन्मोत्सव – जन्म + उत्सव
30. अन्योक्ति – अन्य + उक्ति
31. नीलोत्पल – नील + उत्पल
32. परोपकार – पर + उपकार
33. सर्वोदय – सर्व + उदय
34. अन्त्योदय – अन्त्य + उदय
35. महोदय – महा + उदय
36. महोत्सव – महा + उत्सव
37. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
38. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
39. देवर्षि – देव + ऋषि
40. हेमन्तर्तु – हेमन्त + ऋतु
41. शीतर्तु – शीत + ऋतु
42. शिशिरर्तु – शिशिर + ऋतु
43. उत्तमर्ण – उत्तम + ऋण
44. अधमर्ण – अधम + ऋण
45. राजर्षि – राज + ऋषि
46. महर्ण – महा + ऋण
47. महर्तु – महा + ऋतु
48. तवल्कार – तल + लृकार

नोट

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी। जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ़
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी। जैसे– अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि